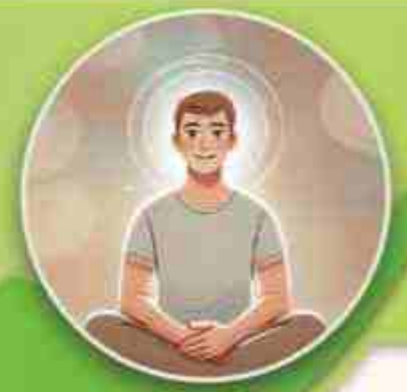


फूल स्टॉप की शक्ति त्यर्थ से समर्थता की यात्रा



एक बूंद जो पूरा स्वाद बदल देती है

यदि दूध से भरे एक बर्तन में नींबू को केवल एक बूंद गिर जाए, तो पूरे दूध का स्वाद बदल जाता है। इसी प्रकार जीवन में व्यर्थ संकल्पों की थोड़ी-सी मिलावट भी हमारी मानसिक शान्ति और आध्यात्मिक शक्ति को प्रभावित कर देती है। हम अक्सर बड़े दोषों से बचने का प्रयास करते हैं, लेकिन छोटी-छोटी चिंताएँ, शिकायतें, अलोचनाएँ और अनावश्यक विचार हमारी ऊर्जा को धीरे-धीरे समाप्त करते रहते हैं। यही कारण है कि आज मनुष्य बाहरी रूप से सफल दिखाई देता है, लेकिन भीतर से थका हुआ और असंतुष्ट अनुभव करता है।

त्यर्थ चिंतन: ऊर्जा का अदृश्य चोर

जीवन में परिस्थितियाँ आना स्वाभाविक है। समस्या परिस्थितियाँ नहीं, बल्कि उनके प्रति हमारी प्रतिक्रिया है। किसी ने कुछ कह दिया, कोई कार्य अपेक्षा के अनुसार नहीं हुआ, या किसी ने हमारी भावनाओं को नहीं समझा—बस मन उसी घटना के इर्द-गिर्द घूमने लगता है।

'ऐसा क्यों हुआ?' 'उसने ऐसा क्यों किया?' 'मेरे साथ ही ऐसा क्यों होता है?'

ये प्रश्न देखने में साधारण लगते हैं, लेकिन यही हमारी मानसिक शक्ति को क्षीण कर देते हैं। हम समाधान खोजने के बजाए परिस्थितियों का पोस्टमार्टम करने लगते हैं। परिणामस्वरूप मन अशांत हो जाता है और हमारी निर्णय क्षमता भी प्रभावित होने लगती है।

पूर्ण विराम की शक्ति: व्यर्थ संकल्पों को समाप्त करने का सबसे प्रभावशाली उपाय है—पूर्ण विराम। जब मन व्यर्थ दिशा में जाने लगे, तब दृढ़ संकल्प के साथ स्वयं से कहना होगा—'बस, अब नहीं सोचना है।' यहाँ कोई 'कौमा' नहीं, कोई 'प्रश्नचिह्न' नहीं, केवल 'पूर्ण विराम'। यही दृढ़ता हमें मानसिक गड़काव से बचाती है। जब हम व्यर्थ

विचारों को बार-बार महत्व देना बंद कर देते हैं, तब धीरे-धीरे उनका प्रभाव भी समाप्त होने लगता है। वास्तव में समर्थ जीवन का आधार ही दृढ़ संकल्प है।

कर्म का बीज और भविष्य का फल

आध्यात्मिक ज्ञान हमें सिखाता है कि प्रत्येक संकल्प एक बीज के समान है। किसान जब बीज बोता है, तो वह सुदृढ़ फल

त्यर्थ संकल्प



की अपेक्षा नहीं करता। उसे विश्वास होता है कि समय आने पर वही बीज विशाल वृक्ष बनेगा। उसी प्रकार आज का प्रत्येक श्रेष्ठ संकल्प भविष्य के सुख, शान्ति और सफलता का आधार बनता है। संगमरुत पर बोया गया पवित्रता

अ १ र

समर्थता का

बीज आने वाले

समय में सुखद परिणामों

के रूप में फलित होता है। इसलिए

हमें अपने संकल्पों की गुणवत्ता पर विशेष

ध्यान देना चाहिए।

समय की पुकार: अभी और इसी क्षण

मनुष्य का स्वभाव है कि वह परिवर्तन को कल पर टाल देता है। वह सोचता है कि बाद में सुधार करेंगे, बाद में ध्यान देंगे, बाद में समय निकालेंगे। लेकिन समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता।

आज विश्व की परिस्थितियाँ स्पष्ट संकेत दे रही हैं कि हमें अपने भीतर परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। जो करना है, वह अभी करना है। व्यर्थ को समाप्त करने और समर्थता को अपनाने का यही सबसे उपयुक्त समय है।

समर्थ जीवन की ओर एक कदम

यदि हम अपने संकल्पों को नियमित रूप से चेक करें, सुखद परिणाम स्मृति से दिन की शुरुआत करें, दिनभर श्रेष्ठ विचारों का अभ्यास करें और रात को मन को हल्का करके सोयें, तो जीवन में अद्भुत परिवर्तन आ सकता है।

सच्ची सफलता परिस्थितियों को बदलने में नहीं, बल्कि अपने विचारों का स्वामी बनने में है। जब मन समर्थ बनता है, तब परिस्थितियाँ भी हमें विचलित नहीं कर पाती।

अतः आज आवश्यकता बाहरी दुनिया को बदलने से पहले अपने भीतर की दुनिया को बदलने की है। व्यर्थ संकल्पों पर पूर्ण विराम लगाना केवल एक मानसिक अभ्यास नहीं, बल्कि समर्थ और सुखमय जीवन की आधारशिला है। जो व्यक्ति अपने विचारों का मालिक बन जाता है, वह परिस्थितियों का दम नहीं खाता। यही आध्यात्मिकता का सार है और यही श्रेष्ठ जीवन की पहली शर्त भी।



बैलिया-बिहार: बिहार सरकार एवं ब्रह्मकुमारी के तत्वावधान में मधुबनी स्थित पॉलिटेक्निक वेस्ट चंपारण में "स्ट्रेस मैनेजमेंट, मेटल हेल्थ अवेयरनेस और डी एडवेंचर" विषय पर आयोजित कार्यशाला में कांटेमलर रामेश्वर पांडे, शिक्षक अभय कुमार गिरि, कॉलेज के प्राचार्य डॉ. निवेकराज पाठक, ब.कु. संजय, ब.कु. चोदनी, ब.कु. अजय, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. अंजना, ब.कु. रंजित, ब.कु. गौरव आदि की उपस्थिति रही।



हाजीपुर-राजपूत कॉलोनी(बिहार): 90वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव में आयोजित दो दिवसीय 12 ज्योतिर्लिंग श्रद्धा कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए सिद्धर गांव की मुखिया संगीता राय, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. अंजलि, सह संचालिका ब.कु. आरती तथा अन्य।



ब्रह्मपुर-गिरी रोड(ओडिशा): महाशिवरात्रि के अवसर पर बंकटपुर में आयोजित कार्यक्रम के पत्राचार समूह चित्र में तहसीलदार डॉ. मानस रंजन, सरपंच मिनाक्षी सेठी, ब.कु. लक्ष्मी, ब.कु. कल्पना तथा अन्य।



कोरापुट-ओडिशा: त्रिमूर्ति शिव जयंती उत्सव पर आयोजित अतिथियों को ईश्वरीय सीमा प्रदान करते हुए ब.कु. स्वर्णा सहन।



अंगुस-ओडिशा: विश्व स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य में नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत गवर्नमेंट ऑर्टोनामस कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम के पत्राचार समूह चित्र में ब.कु. रजनी, मुखा छात्रा एवं शिक्षकगण।



हरिनगर-दिल्ली: साउथ जर्नल अग्री मुद्राकरण में जनरल उपेन्द्र द्विवेदी, सेना प्रमुख से स्नेह मुद्राकरण कर उनके भविष्य के लिए शुभकामनाएं देने के साथ इंग्लैंड सीमा भेद करते हुए राजस्थान के ब.कु. मुकुंद सोदी, जिला उपाध्यक्ष सिमरप्रीति सर्विस विंग। साथ ही एसएन पोस्टमैन एसएस पीक नेगी, ब.कु. नेहा एवं ब.कु. सारिका।



बैलिया-फादर(बिहार): 20 वर्षों से संचालित ब्रह्मकुमारी चक्रावत में स्थापना कर, 2007 से इंग्लैंड जून में चल रहे चक्रावत चक्रावत को मुकुट, मान, चक्रावत चक्रावत करने के पत्राचार समूह चित्र में निर्मिता टीका ब.कु. अलोक कर्मा, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. विद्या, ब.कु. रंजित तथा अन्य।



गढ़-एच सी कॉलोनी(बिहार): नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत आयोजित नशा मुक्त कार्यक्रम में प्रतिलिपि करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब.कु. सुनीता। मौके पर उपस्थित थे डॉ. नीरज कुमार, डॉ. नादयण, राजकुमार आनंद तथा अन्य।